

रविवार 28 जुलाई, 2024

## विषय — सत्य

### स्वर्ण पाठ: यूहन्ना 8: 32

---

"और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

---

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 8: 12-16, 28, 29, 36

- 12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
- 13 फरीसियों ने उस से कहा; तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं।
- 14 यीशु ने उन को उत्तर दिया; कि यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तौभी मेरी गवाही ठीक है, क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मैं कहां से आया हूँ और कहां को जाता हूँ परन्तु तुम नहीं जानते कि मैं कहां से आता हूँ या कहां को जाता हूँ।
- 15 तुम शरीर के अनुसार न्याय करते हो; मैं किसी का न्याय नहीं करता।
- 16 और यदि मैं न्याय करूँ भी, तो मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अकेला नहीं, परन्तु मैं हूँ, और पिता है जिस ने मुझे भेजा।
- 28 तब यीशु ने कहा, कि जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ाओगे, तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ।
- 29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूँ, जिस से वह प्रसन्न होता है।
- 36 सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

## पाठ उपदेश

### बाइबल

#### 1. भजन संहिता 25: 4, 5, 8-10, 12, 13

- 4 हे यहोवा अपने मार्ग मुझ को दिखला; अपना पथ मुझे बता दे।

---

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 5 मुझे अपने सत्य पर चला और शिक्षा दे, क्योंकि तू मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ।
- 8 यहोवा भला और सीधा है; इसलिये वह पापियों को अपना मार्ग दिखलाएगा।
- 9 वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हां वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।
- 10 जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं, उनके लिये उसके सब मार्ग करूणा और सच्चाई हैं॥
- 12 वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है चलाएगा।
- 13 वह कुशल से टिका रहेगा, और उसका वंश पृथ्वी पर अधिकारी होगा।

## 2. भजन संहिता 51: 6

- 6 देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।

## 3. दानियेल 2: 1 (में), 2 (से 1st.), 4, 5, 10 (से), 13, 16-20, 25-28 (से)

- 1 ...अपने राज्य के दूसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने ऐसा स्वप्न देखा जिस से उसका मन बहुत ही व्याकुल हो गया और उसको नींद न आई।
- 2 तब राजा ने आज्ञा दी, कि ज्योतिषी, तन्त्री, टोनहे और कसदी बुलाए जाएं कि वे राजा को उसका स्वप्न बताएं; सो वे आए और राजा के साम्हने हाजिर हुए।
- 4 कसदियों ने, राजा से अरामी भाषा में कहा, हे राजा, तू चिरंजीव रहे! अपने दासों को स्वप्न बता, और हम उसका फल बताएंगे।
- 5 राजा ने कसदियों को उत्तर दिया, मैं यह आज्ञा दे चुका हूँ कि यदि तुम फल समेत स्वप्न को न बताओगे तो तुम टुकड़े टुकड़े किए जाओगे, और तुम्हारे घर फुंकवा दिए जाएंगे।
- 10 कसदियों ने राजा से कहा, पृथ्वी भर में ऐसा कोई मनुष्य नहीं जो राजा के मन की बात बता सके; और न कोई ऐसा राजा, वा प्रधान, वा हाकिम कभी हुआ है जिसने किसी ज्योतिषी वा तन्त्री, वा कसदी से ऐसी बात पूछी हो।
- 13 सो यह आज्ञा निकली, और पण्डित लोगों का घात होने पर था; और लोग दानियेल और उसके संगियों को ढूंढ़ रहे थे कि वे भी घात किए जाएं।
- 16 और दानियेल ने भीतर जा कर राजा से बिनती की, कि उसके लिये कोई समय ठहराया जाए, तो वह महाराज को स्वप्न का फल बता देगा।
- 17 तब दानियेल ने अपने घर जा कर, अपने संगी हनन्याह, मीशाएल, और अजर्याह को यह हाल बता कर कहा,
- 18 इस भेद के विषय में स्वर्ग के परमेश्वर की दया के लिये यह कह कर प्रार्थना करो, कि बाबुल के और सब पण्डितों के संग दानियेल और उसके संगी भी नाश न किए जाएं।

- 19 तब वह भेद दानियेल को रात के समय दर्शन के द्वारा प्रगट किया गया। सो दानियेल ने स्वर्ग के परमेश्वर का यह कह कर धन्यवाद किया,  
20 परमेश्वर का नाम युगानुयुग धन्य है; क्योंकि बुद्धि और पराक्रम उसी के हैं।  
25 तब अर्योक ने दानियेल को राजा के सम्मुख शीघ्र भीतर ले जा कर उस से कहा, यहूदी बंधुओं में से एक पुरुष मुझ को मिला है, जो राजा को स्वप्न का फल बताएगा।  
26 राजा ने दानियेल से, जिसका नाम बेलतशस्सर भी था, पूछा, क्या तुझ में इतनी शक्ति है कि जो स्वप्न मैं ने देखा है, उसे फल समेत मुझे बताए?  
27 दानियेल ने राजा का उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बताने वाले राजा को बता सकते हैं,  
28 परन्तु भेदों का प्रगटकर्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होने वाला है।

#### 4. दानियेल 4: 37 (सं:)

- 37 अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं॥

#### 5. नीतिवचन 3: 1-4

- 1 हेमेरे पुत्र, मेरी शिक्षा को न भूलना; अपने हृदय में मेरी आज्ञाओं को रखे रहना;  
2 क्योंकि ऐसा करने से तेरी आयु बढ़ेगी, और तू अधिक कुशल से रहेगा।  
3 कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना।  
4 और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा॥

#### 6. भजन संहिता 100: 5

- 5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

#### 7. यूहन्ना 7: 14-18

- 14 और जब पर्व के आधे दिन बीत गए; तो यीशु मन्दिर में जाकर उपदेश करने लगा।

- 15 तब यहूदियों ने अचम्भा करके कहा, कि इसे बिन पढ़े विद्या कैसे आ गई?
- 16 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मेरा उपदेश मेरा नहीं, परन्तु मेरे भेजने वाले का है।
- 17 यदि कोई उस की इच्छा पर चलना चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं।
- 18 जो अपनी ओर से कुछ कहता है, वह अपनी ही बड़ाई चाहता है; परन्तु जो अपने भेजने वाले की बड़ाई चाहता है वही सच्चा है, और उस में अधर्म नहीं।

## 8. यूहन्ना 12: 35, 46

- 35 यह मनुष्य का पुत्र कौन है? यीशु ने उन से कहा, ज्योति अब थोड़ी देर तक तुम्हारे बीच में है, जब तक ज्योति तुम्हारे साथ है तब तक चले चलो; ऐसा न हो कि अन्धकार तुम्हें आ घेरे; जो अन्धकार में चलता है वह नहीं जानता कि किधर जाता है।
- 46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।

## 9. 2 कुरिन्थियों 6: 1, 4 (से 2nd,), 6, 7 (से 1st,)

- 1 और हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं, कि परमेश्वर का अनुग्रह जो तुम पर हुआ, व्यर्थ न रहने दो।
- 4 परन्तु हर बात से परमेश्वर के सेवकों की नाई अपने सद्गुणों को प्रगट करते हैं, बड़े धैर्य से, क्लेशों से, दिरद्रता से, संकटों से।
- 6 पवित्रता से, ज्ञान से, धीरज से, कृपालुता से, पवित्र आत्मा से।
- 7 सच्चे प्रेम से, सत्य के वचन से, परमेश्वर की सामर्थ से; धार्मिकता के हथियारों से जो दाहिने, बाएं हैं।

## 10. 1 यूहन्ना 5: 20

- 20 और यह भी जानते हैं, कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है और उस ने हमें समझ दी है, कि हम उस सच्चे को पहचानें, और हम उस में जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में रहते हैं: सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन यही है।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 282: 26 केवल, 32 (सच ये है)-1

सत्य अमर मन की बुद्धि है.

सत्य वह प्रकाश है जो त्रुटि को दूर करता है।

## 2. 272: 3-7 (सं;)

सत्य को समझने से पहले सच्चाई की आध्यात्मिक समझ हासिल करनी चाहिए। इस भावना को केवल इसलिए आत्मसात किया जाता है क्योंकि हम ईमानदार, निःस्वार्थ, प्यार और नम्र हैं। "ईमानदार और अच्छे दिल" की मिट्टी में बीज बोना चाहिए;

## 3. 492: 7-12

पवित्र होना, समरसता, अमरता है। यह पहले से ही साबित हो गया है कि इस का ज्ञान, यहां तक कि छोटी सी डिग्री में, नश्वर लोगों के भौतिक और नैतिक स्तर को ऊपर उठाएगा, दीर्घायु को बढ़ाएगा, चरित्र को शुद्ध और ऊंचा करेगा। इस प्रकार प्रगति अंततः सभी त्रुटि को नष्ट कर देगी, और अमरता को प्रकाश में लाएगी।

## 4. 493: 1 (क्रिश्चियन)-2, 6-8

क्रिश्चियन साइंस तेजी से सच को विजयी दिखाता है ... भौतिक ज्ञान के सभी प्रमाण और भौतिक ज्ञान से प्राप्त सभी ज्ञान विज्ञान को सभी चीजों के अमर सत्य तक पहुंचाना चाहिए।

## 5. 201: 1-19

सबसे अच्छा उपदेश जो सत्य का उपदेश है, वह पाप, बीमारी और मृत्यु के विनाश द्वारा प्रचलित और प्रदर्शित किया जाने वाला सत्य है। यह जानकर और यह जानकर कि एक स्नेह हम में सर्वोच्च होगा और हमारे जीवन में अग्रणी होगा, यीशु ने कहा; "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।"

हम झूठी नींव पर सुरक्षित रूप से निर्माण नहीं कर सकते। सत्य एक नया प्राणी बनाता है, जिसमें पुरानी चीजें गुजर जाती हैं और "सभी चीजें नई हो गई हैं।" जुनून, स्वार्थ, झूठी भूख, घृणा, भय, सभी कामुकता, आध्यात्मिकता के लिए उपज, और होने का अतिरेक ईश्वर की तरफ है, अच्छा।

हम पहले से भरे हुए बर्तन नहीं भर सकते। उन्हें पहले खाली किया जाना चाहिए। त्रुटि को अस्वीकार करें। फिर, जब ईश्वर की हवाएँ बहेंगी, तो हम अपने तंतुओं को हमारे करीब नहीं लाएँगे।

नश्वर मन से त्रुटि निकालने का तरीका प्रेम के बाढ़-ज्वार के माध्यम से सच्चाई में डालना है। ईसाई पूर्णता किसी अन्य आधार पर नहीं जीती जाती।

## 6. 322: 31-5

"क्या तू खोज कर ईश्वर को खोज सकता है?" सत्य को स्वयं की गलती से छुटकारा देने के लिए इच्छा करना आसान है। मुर्दा लोग क्रिश्चियन साइंस की समझ की तलाश कर सकते हैं, लेकिन वे क्राइस्टियन साइंस से उनके लिए प्रयास किए बिना तथ्यों को चमकने में सक्षम नहीं होंगे। इस संघर्ष में हर तरह की त्रुटि का त्याग करने और कोई अन्य चेतना नहीं बल्कि अच्छा होने का प्रयास शामिल है।

## 7. 323: 13-27

अधिक जानने के लिए, हमें जो पहले से जानते हैं उसे व्यवहार में लाना चाहिए। हमें यह याद रखना चाहिए कि सत्य को समझने पर प्रदर्शित किया जा सकता है, और उस अच्छे को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक कि प्रदर्शित न हो जाए। यदि हम "थोड़े में विश्वासयोग्य" रहें, तो हम बहुतों के अधिकारी बनाये जायेंगे; परन्तु एक अप्रयुक्त प्रतिभा नष्ट हो जाती है। जब बीमार या पापी व्यक्ति यह महसूस करने के लिए जागते हैं कि उनके पास जो नहीं है उसकी आवश्यकता है, तो वे दिव्य विज्ञान के प्रति ग्रहणशील हो जाते हैं, जो उन्हें भौतिक इंद्रियों से दूर कर आत्मा की ओर आकर्षित करता है, शरीर से विचारों को हटा देता है, तथा नश्वर मन को भी रोग या पाप से बेहतर किसी चीज के चिंतन की ओर ऊपर उठा देता है। ईश्वर का सच्चा विचार जीवन और प्रेम की सच्ची समझ देता है, जीत की कब्र को लूटता है, सभी पापों और भ्रम को दूर करता है कि अन्य मन हैं, और मृत्यु दर को नष्ट कर देता है।

## 8. 213: 30-4

इससे पहले कि मानव ज्ञान चीजों की झूठी भावना में अपनी गहराई तक डूबा हो, — भौतिक उत्पत्ति में विश्वास करते हैं जो एक मन और अस्तित्व के सच्चे स्रोत को छोड़ देते हैं, — यह संभव है कि सत्य से छापें ध्वनि के रूप में अलग थीं, और वे ध्वनि के रूप में आदिम नबियों के लिए आए थे। यदि सुनने का माध्यम पूर्ण आध्यात्मिक है, तो यह सामान्य और अविनाशी है।

## 9. 146: 23-30

दिव्य विज्ञान बाइबिल से अपनी मंजूरी प्राप्त करता है, और बीमारी और पाप को ठीक करने में सत्य के पवित्र प्रभाव के माध्यम से विज्ञान की दिव्य उत्पत्ति का प्रदर्शन किया जाता है। सत्य की यह उपचार शक्ति उस अवधि के लिए पूर्वकाल में रही होगी, जिसमें यीशु रहते थे। यह उतना ही प्राचीन है जितना कि "प्राचीन दिन"। यह सभी जीवन के माध्यम से रहता है, और पूरे अंतरिक्ष में फैला हुआ है।

**10. 367: 30-9**

क्योंकि सत्य अनंत है, त्रुटि को कुछ भी नहीं के रूप में जाना जाना चाहिए। क्योंकि सत्य अच्छाई में सर्वशक्तिमान है, त्रुटि, सत्य के विपरीत, कोई हो सकता है। बुराई है, लेकिन शून्य का प्रतिकार है। सबसे बड़ा गलत है, लेकिन सर्वोच्च अधिकार के विपरीत है। विज्ञान से प्रेरित विश्वास इस तथ्य में निहित है कि सत्य वास्तविक है और त्रुटि असत्य है। सत्य से पहले त्रुटि कायरता है। दिव्य विज्ञान जोर देकर कहता है कि समय यह सब साबित करेगा। सत्य और त्रुटि दोनों नश्वरता की आशंका से पहले से कहीं अधिक निकट आ गए हैं, और सत्य अभी भी स्पष्ट हो जाएगा क्योंकि त्रुटि स्वयं नष्ट हो गई है।

**11. 216: 11-18**

यह समझ कि अहंकार मन है, और यह कि एक मन या बुद्धि है, एक बार में नश्वर अर्थ की त्रुटियों को नष्ट करने और अमर भावना की सच्चाई की आपूर्ति करने के लिए शुरू होता है। यह समझ शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाती है; यह तंत्रिकाओं, हड्डियों, मस्तिष्क इत्यादि को नौकरों के बजाय नौकर बनाता है। यदि मनुष्य दिव्य मन के नियम से संचालित होता है, तो उसका शरीर हमेशा की ज़िंदगी और सच्चाई और प्रेम को प्रस्तुत करने में है।

**12. 184: 12-15**

सत्य, जीवन और प्रेम ही मनुष्य पर एकमात्र वैध और शाश्वत मांग हैं, और वे आध्यात्मिक कानून निर्माता हैं, जो ईश्वरीय विधियों के माध्यम से आज्ञाकारिता को लागू करते हैं।

**13. 142: 31-4**

सत्य हर प्रकार की त्रुटि के लिए ईश्वर का उपाय है, और सत्य केवल असत्य को नष्ट कर देता है। इसलिए तथ्य यह है कि आज, कल की तरह, मसीह बुराइयों को दूर करता है और बीमारों को चंगा करता है।

**14. 288: 31-2**

शाश्वत सत्य को नष्ट कर देता है जो लगता है कि मनुष्यों ने त्रुटि से सीखा है, और भगवान के बच्चे के रूप में मनुष्य का वास्तविक अस्तित्व प्रकाश में आता है। सत्य का प्रदर्शन शाश्वत जीवन है।

**15. 192: 4-10 (से 2nd.), 27-29**

हम वैज्ञानिक हैं, केवल तभी जब हम उस पर अपनी निर्भरता छोड़ देते हैं जो असत्य है और सत्य को समझ लेते हैं। हम तब तक वैज्ञानिक नहीं हैं जब तक हम सब कुछ मसीह पर छोड़ नहीं देते। मानवीय विचार आध्यात्मिक

नहीं हैं। वे कान की सुनवाई से, सिद्धांत के बजाय भौतिकता से, और अमर के बजाय नश्वर से आते हैं। आत्मा ईश्वर से अलग नहीं है। आत्मा ईश्वर है।

हम ईश्वरीय तत्वमीमांसा की समझ में अपने गुरु के उदाहरण का अनुसरण करके सत्य और प्रेम के नक्शेकदम पर चलते हैं।

## 16. 255: 1 (शाश्वत)-6

शाश्वत सत्य ब्रह्मांड को बदल रहा है। जैसे-जैसे नश्वर अपने मानसिक कपड़े उतारते हैं, विचार अभिव्यक्ति में फैलता है। "उजियाला हो", सत्य और प्रेम की सतत मांग है, अराजकता को क्रम में और कलह को क्षेत्रों के संगीत में बदलना।

### दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने,



परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

*चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1*

## कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

*चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6*